ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब।
ए खेल तुम खातिर, खसमें रचिया ख्वाब।। ३८ ।।

हे मोमिनो! देखो, यह खेल इस तरह से बेहिसाब है जो तुम्हारे लिए अपने धनी ने सपने में बनाया है।

मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब।
ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब।। ३९ ।।

मोमिनों के मेले में सपने का कोई जीव नहीं आ सकता, इसलिए इस सपने के संसार को अच्छी तरह से पहचानना जिससे तुम्हें दीन का लाभ मिले।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३४० ।।

सनन्ध–जुदे जुदे फिरकों की जिद

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खैंचा खैंच करत।
ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत।। १ ।।

हे मेरे मोमिनो! अब मैं तुम्हें इन सब धर्म, पन्थों की खींच-तान बताती हूं। यह सब झूठ में रंगे हैं और किसी को भी पार की सुध नहीं है।

खेल खेलें और रब्दें, मिनो मिने करें क्रोध।
जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई व्रोध।। २ ।।

इस खेल में खेलते हैं और आपस में क्रोधित होकर झगड़ा करते हैं। जिस तरह से मगरमच्छ आपस की दुश्मनी नहीं छोड़ते, उसी तरह इनका हाल है।

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान।। ३ ।।

कोई दान, कोई ज्ञान, कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और अटकल लगाकर लड़ते हैं।

कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल।। ४ ।।

कोई कर्म को, कोई काल को तथा कोई साधन को बड़ा कहकर झूठ में लड़ते रहते हैं।

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत।। ५ ।।

कोई तीर्थ को, कोई तप को, कोई शील को, कोई सत को बड़ा कहता है।

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत।
कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कई जुगत।। ६ ।।

कोई विचार को, कोई व्रत को, कोई बुद्धि को तथा कोई युक्ति को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत।। ७ ।।

कोई करनी, कोई मुक्ति, कोई भाव तथा कोई भक्ति को बड़ा कहते हैं।

Nijanand App

कोई कहे कीरंतन बड़ा, कोई कहे श्रवन।
कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन।। ८ ।।

कोई कीर्तन को, कोई श्रवण को, कोई वन्दना को, कोई अर्चना को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन।। ९ ।।

कोई ध्यान को, कोई धारण को, कोई सेवा को, कोई अर्पण को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विश्वास।। १० ।।

कोई संगति, कोई दास, कोई विवेक और कोई विश्वास को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस।
कोई कहे पन बड़ा, यों खेलें परे परवस।। ११ ।।

कोई शान्ति को, कोई तामस को, कोई प्रतिज्ञा को बड़ा कहकर बेबस होकर खेलते हैं।

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन।
कोई कहे आदे आद माता, यों करत तानों तान।। १२ ।।

कोई सदा शिव को, कोई आदि नारायण को, कोई आदि माता को बड़ा कहकर आपस में खींचातानी करते हैं।

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन।। १३ ।।

कोई आत्मा को, कोई परआतम को, कोई अहंकार को जो शुरू से ही पैदा है, बड़ा कहते हैं।

कोई कहे सकल व्यापक, देखीतां सब ब्रह्म।
कोई कहे ए ना लह्या, यों करे लड़ाई भूले भरम।। १४ ।।

कोई कहते हैं ब्रह्म सबमें व्यापक है, कोई कहते हैं हमने पा लिया। कोई कहता है हमने नहीं पाया। इस तरह से संशय में डूबे हुए लड़ते हैं।

कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन।। १५ ।।

कोई शून्य को, कोई निरंजन को, कोई निर्गुण को बड़ा कहकर वेद के वचनों से लड़ते हैं।

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार।
कोई कहे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार।। १६ ।।

कोई आकार को, कोई निराकार को तथा कोई तेज को बड़ा कहकर संशय में लड़ते हैं।

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे परसोतम।
वेद के वाद अन्धकारे, करें लड़ाई धरम।। १७ ।।

कोई पारब्रह्म को, कोई पुरुषोत्तम को बड़ा कहते हैं तथा अन्धकार में वेदों पर वाद-विवाद कर धर्म में लड़ाई करते हैं।

Nijanand App

जाहेर झूठा खेलही, हिरदे अति अन्धेर।
कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर।। १८ ।।

यह सब जाहिर में झूठे हैं तथा इनके हृदय संशय से भरे हैं। यह कहते हैं कि हम ही सच्चे हैं। बाकी सब झूठे हैं। इस तरह से उलटे चक्कर में पड़े हैं।

पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट।। १९ ।।

सारे पन्थों की भी यही हालत है। वैराट में अनेक तरह के पन्थों की यह मंजिल है। खेल की जो हकीकत बताई, यह सब माया का ही ठाट-बाट है।

कोई हेम गले अगनी जले, भैरव करवत ले।
खसम को पावें नहीं, जो तिल तिल काटे देह।। २० ।।

कोई बर्फ में गलते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई भैरव में झांप खाते हैं और कई काशी में जाकर करवट लेते हैं और इस तरह से अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करते हैं, परन्तु पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

भेख जुदे जुदे खेलहीं, जाने खेल अखंड।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड।। २१ ।।

कई तरह-तरह के भेष बनाकर खेलते हैं और इस खेल को अखण्ड समझते हैं, जबकि यह सब जो दिख रहा है वह मिटने वाला संसार है। यह बिना जड़ के खड़ा है।

खसम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। २२ ।।

धनी सबका एक है, दूसरा तो कोई है नहीं। ऐसा विचार तो वही कर सकता है, जो स्वयं सच्चा हो।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।। २३ ।।

यह सब बेसुधी में खेलते हुए बड़े-बड़े वचन बोलते हैं, जबकि यह सारी सृष्टि मोह से पैदा हुई है और मिट जाने वाली है।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।
तो ए क्यों पावें खुद को, जाको मूल मोह सुंन।। २४ ।।

इस तरह यहां पर बिना दीवार के अनेक तरह के चित्र बना रहे हैं। ऐसे लोग संसार के हैं जिनका मूल ही शून्य निराकार है। वह पारब्रह्म को कैसे पा सकते हैं?

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।
ए छल मोहोरे छल के, खेलत हैं सत कर।। २५ ।।

यहां पर अनेक तरह के कवि पैदा हुए जिन्होंने संसार को कभी चल कभी अचल कहा है। यह सब छल के मोहरे (अग्रसर) हैं और इसी छल को सत मानकर खेलते हैं।

Nijanand App